पहला तिमुथियुसः परमेश्वर का घर

गुलामी के बारे में तुम्हारा क्या कहना है, पौलुस?

डॉ. डेविड प्लैट

2 अक्टुबर, 2011

गुलामी के बारे में तुम्हारा क्या कहना है, पौलुस?

1 तिमुथियुस 6:1–2

यदि आपके पास परमेश्वर का वचन है, और मेरी आशा है कि आपके पास है, तो कृपया मेरे साथ 1 तिमुथियुस 6 को निकालें। 87 साल पहले हमारे पूर्वजों ने इस महाद्वीप पर एक नए स्वतंत्र राष्ट्र की स्थापना की थी, और इस प्रस्ताव के लिए समर्पित किया था कि सारे लोगों की सृष्टि समान रूप से की गई है।" निःसन्देह आप इसे अमरीकी इतिहास के सर्वाधिक प्रसिद्ध भाषणों में से एक, गेटिसबर्ग भाषण के शुरूआती शब्दों के रूप में पहचानते हैं, जो तत्कालीन राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन द्वारा 19 नवम्बर, 1863 को दिया गया था। यह समानता की एक पुकार थी जो दक्षिणी संघ में प्रचलित दास प्रथा का प्रत्यक्ष अपमान थी। कुछ लोग उसे "मसीही दक्षिण" भी कहते हैं। इस राज्य में और दूसरे राज्यों में सारे समुदायों में पासबान और कलीसियाई सदस्य मुख्यतः अफ्रीकी गुलामों का क्रय, विक्रय, व्यापार, उपयोग और दुर्व्यवहार कर रहे थे। कोई सन्देह नहीं कि यह अमरीकी इतिहास के काले समयों में से एक था, इतिहास का ऐसा समय जो आज सुबह हमारे लिए उस परिच्छेद को थोड़ा संवेदनशील बना देता है, जिसे हम पढ़ रहे हैं।

पौलुस कहता है,

> *जितने दास जूए के नीचे हैं, वे अपने–अपने स्वामी को बड़े आदर के योग्य जानें, ताकि परमेश्वर के नाम और उपदेश की निन्दा न हो। और जिनके स्वामी विश्वासी हैं, इन्हें वे भाई होने के कारण तुच्छ न जानें; वरन् उनकी और भी सेवा करें, क्योंकि इस से लाभ उठाने वाले विश्वासी और प्रेमी हैं।*

इसे पढ़ते ही हम सोचते हैं, "क्या पौलुस दास प्रथा का समर्थन कर रहा है? क्या नया नियम दास प्रथा का समर्थन करता है?" आप पुराने नियम में जाते हैं, और आप वहाँ दास प्रथा के बारे में बातचीत को देखते हैं और आप सोचने लगते हैं, "क्या परमेश्वर गुलामी का समर्थक है?" यह एक महत्वपूर्ण सवाल है जिसे विशेषतः, यूरोप और अमरीका में मसीहियों द्वारा दास प्रथा के प्रयोग के प्रकाश में हालिया वर्षों में मसीहियों से पूछा जाता रहा है। अतः, बाइबल दास प्रथा के बारे में क्या कहती है और पौलुस ने 1 तिमुथियुस 6:1–2 में यह सब क्यों लिखा है, और उसका सुसमाचार की हमारी समझ और आज संसार में दास प्रथा से क्या संबंध है?

मैं इसी में डुबकी लगाना चाहता हूँ, और हम पूरे पवित्रशास्त्र को देखेंगे इसलिए विभिन्न स्थानों पर जाने के लिए तैयार रहें। 1 तिमुथियुस 6 को आधार वचन के रूप में खुला रखें, और कुछ अलग–अलग स्थानों पर जाएँगे। ऐसे कई वचन होंगे जिन्हें निकालने का हमारे पास समय नहीं होगा, इसलिए उन्हें आप लिख सकते हैं।

इतिहास में दास प्रथा...

संसार का इतिहास दास प्रथा के विविध प्रकारों से भरा है।

पवित्रशास्त्र में उतरने से पहले, मैं चाहता हूँ कि हम एक पल के लिए दास प्रथा और इतिहास के बारे में सोचें क्योंकि संसार का इतिहास दास प्रथा के विविध प्रकारों से भरा है। जब मैं "गुलामी" शब्द कहता हूँ, तो मुझे पता है कि संसार भर की एक तस्वीर आपके मन में उभरती है। मेरा अनुमान है कि विभिन्न लोगों की पृष्ठभूमि के आधार पर, जब आप "गुलामी" शब्द को सुनते हैं तो आपके मन में विभिन्न प्रकार की तस्वीरें उभरती हैं। आप तुरन्त ही उस शब्द को रीतियों, दुर्व्यवहारों, और अन्यायों से जोड़ देते हैं। अतः, शुरूआत से ही हमें यह महसूस करने की जरूरत है कि यह "गुलामी" शब्द वास्तव में संसार के इतिहास में विभिन्न प्रकार की बहुत सारी प्रथाओं का प्रतिनिधित्व करता है, जिनमें से कुछ दूसरी रीतियों से भी बदतर हैं। अतः, इस परिच्छेद के बारे में थोड़ी जानकारी पाने के लिए मैं दास प्रथा के चार अलग–अलग प्रकारों को आपके सामने रखना चाहता हूँ।

पहला है, इब्रानी गुलामी। 1 तिमुथियुस 6 को खुला रखें लेकिन मेरे साथ लैव्यवस्था 25 पर चलें। हम कुछ ही देर में 1 तिमुथियुस पर वापस लौटेंगे। लैव्यवस्था बाइबल की तीसरी पुस्तक है। आइए हम लैव्यवस्था 25 को देखते हैं। पुराने नियम में जब हम परमेश्वर की व्यवस्था को देखते हैं तो हम यहाँ इब्रानी दास प्रथा के इतिहास को देखते हैं, और यह कि इसे दरिद्र इस्राएलियों के लिए किस प्रकार स्थापित किया गया था कि वे अपने आप को गुलामी में, दास बनने के लिए बेच दें, ताकि वे अपनी और अपने परिवारों की जरूरतों को पूरा कर सकें। अब, व्यवस्थाविवरण 15 से हम जानते हैं कि परमेश्वर की इच्छा यह थी कि उसके लोगों में कोई भी दरिद्र न रहे। साथ ही, पापी संसार में, दरिद्रता आएगी। अतः, परमेश्वर ने इब्रानी दास प्रथा की इस तस्वीर के द्वारा निर्धनों के लिए एक प्रबन्ध किया। 25:35 को देखें। यह अपने लोगों के लिए परमेश्वर का वचन था।

> *फिर यदि तेरा कोई भाई–बन्धु कंगाल हो जाए, और उसकी दशा तेरे सामने तरस योग्य हो जाए, तो तू उसको संभालना; वह परदेशी वा यात्री की नाईं तेरे संग रहे। उस से ब्याज वा बढ़ती न लेना; अपने परमेश्वर का भय मानना; जिससे तेरा भाई–बन्धु तेरे संग जीवन निर्वाह कर सके। उसको ब्याज पर रूपया न देना, और न उसको भोजनवस्तु लाभ के लालच से देना। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ: मैं तुम्हें कनान देश देने के लिए और तुम्हारा परमेश्वर ठहरने की मनसा से तुम को मिस्र देश से निकाल लाया हूँ। फिर यदि तेरा कोई भाई–बन्धु तेरे सामने कंगाल होकर अपने आप को तेरे हाथ बेच डाले, तो उस से दास के समान सेवा न करवाना। वह तेरे संग मजदूर वा यात्री की नाईं रहे, और जुबली के वर्ष तक तेरे संग रहकर सेवा करता रहे; तब वह बाल–बच्चों समेत तेरे पास से निकल जाए, और अपने कुटुम्ब में और अपने पितरों की निज भूमि में लौट जाए। क्योंकि वे मेरे ही दास हैं, जिनको मैं मिस्र देश से निकाल लाया हूँ: इसलिए वे दास की रीति से न बेचे जाएँ। उस पर कठोरता से अधिकार न करना; अपने परमेश्वर का भय मानते रहना।*

फिर, यह जारी रहता है। अब, यह एक दरिद्र इस्राएली के बारे में बता रहा है। इसके बाद यह दरिद्र विदेशियों के बारे में बताता है, जिसमें उतरने के लिए हमारे पास समय नहीं है, अतः, हम इब्रानी दास प्रथा की इस तस्वीर को यहीं पर छोड़ते हैं। यहाँ पर एक ऐसी प्रणाली को स्थापित किया गया है जिसमें एक दरिद्र इस्राएली अपने आप को गुलामी में बेच सकता है, और वह अपने स्वामी के लिए एक दास के रूप में कार्य करता है, और इस प्रकार, अपने कर्ज को चुकाता है और एक ऐसे बिन्दू पर आता है जहाँ वह अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। यह जुबली के वर्ष के बारे में बताता है। सातवें वर्ष से लेकर प्रत्येक सातवें वर्ष

में, ऐसे दासों को स्वतंत्र होने का अवसर मिलता था। यह मूलतः, अनुबंधित गुलामी के समान ही एक तस्वीर है जिस पर थोड़ी देर में आएँगे, परन्तु पुराने नियम में एक इस्राएली है जो अपने आप को एक इस्राएली स्वामी के हाथ बेच देता है और उसके लिए एक दास के रूप में कार्य करता है ताकि फिर से अपने पैरों पर खड़ा हो सके।

मैं चाहता हूँ कि हम शुरूआत में ही यह महसूस करें कि पुराने नियम में दास प्रथा उस दास प्रथा से भिन्न थी जिसे हम युद्ध पूर्व के दक्षिणी संयुक्त राज्य में देखते हैं। यह एक बहुत ही अलग तस्वीर है। यह पुराना नियम है, इब्रानी गुलामी।

आप नये नियम के पृष्ठों को पलटें, और आपका परिचय यूनानी–रोमी दास प्रथा से होता है, जो पूरी तरह इब्रानी दास प्रथा से भिन्न थी। अतः, आपके पास इब्रानी दास प्रथा में पुराने नियम की गुलामी की पृष्ठभूमि है, फिर आप नये नियम की पृष्ठभूमि पर आते हैं, और वहाँ आप रोमी दास प्रथा को देखते हैं। रोमी साम्राज्य और रोमी अर्थव्यवस्था में दास प्रथा प्रचलित थी। कुछ लोगों का अनुमान है कि रोमी साम्राज्य के एक तिहाई लोग गुलाम रहे होंगे। कुछ लोग 5 या 6 करोड़ का अनुमान लगाते हैं। अतः, जब आप रोमी दास प्रथा की इस पृष्ठभूमि के साथ नये नियम में दास प्रथा की तस्वीर के बारे में सोचते हैं, तो आप इसी एक ही अवधि में दास प्रथा की अलग–अलग तस्वीरों को देख सकते हैं। अतः, कुछ लोग हैं जो गुलाम थे, जिसका मतलब है कि वे विभिन्न तरीकों से कार्य करने वाले कर्मचारी थे। कुछ शिक्षक थे, कुछ कारीगर, कुछ प्रबन्धक, कुछ बावर्ची, कुछ सरकारी अधिकारी थे, और इनमें से बहुत से गुलामों के पास अपने स्वयं के गुलाम भी थे।

अतः, कोई व्यक्ति अपने आप को गुलामी में बेच सकता था; कुछ लोगों के लिए, यह वास्तव में रोमी नागरिकता पाने का, रोमी समाज में एक स्थान पाने का मार्ग था, ऐसे बहुत से मामलों में रोमी दास प्रथा अत्यधिक मानवीय थी और सहायक थी, एवं गुलामों को विभिन्न प्रकार से सुरक्षा और स्थिरता प्रदान करती थी। बहुत से गुलामों को उस समय आजाद कर दिया जाता था, जब वे 30 वर्ष की आयु के एवं अपने पैरों पर खड़े होने में समर्थ हो जाते थे।

अब, दास प्रथा की इस मानवीय और सहायक तस्वीर को दिखाकर मैं यह नहीं कहना चाहता कि दास प्रथा किसी भी प्रकार से आदर्श या सिद्ध या अच्छी थी। एक गुलाम आखिर गुलाम ही था, समाज में अक्सर उसका अनादर होता था, बेबस और शक्तिहीन होता था, और 5–6 करोड़ गुलामों में से, निःसन्देह बहुत से लोगों को कठोर परिश्रम और यौन एवं शारीरिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ता था। अतः, दास प्रथा

निश्चित रूप से आदर्श नहीं थी, परन्तु बात यह है कि यूनानी–रोमी दास प्रथा पुराने नियम की इब्रानी दास प्रथा से बहुत अलग थी, और अमरीकी इतिहास की दास प्रथा से भी कई रीतियों और मामलों में बहुत अलग प्रतीत होती थी।

अतः, यह हमें अमरीकी इतिहास की ओर लाता है। संसार के इतिहास में दास प्रथा की तीसरी तस्वीर, अनुबंधित गुलामी, जो स्पष्टतः अमरीकी उपनिवेश में लोकप्रिय थी। यूरोप से अमरीका में आने वाले बहुत से लोग अपने बल पर ऐसा नहीं कर सकते थे और इसलिए वे अनुबंधित दासों के रूप में अपना अनुबंध करते थे। वे अमरीका में आने के लिए लिए गए कर्ज को चुकाने के लिए वे किसी घर में या प्रशिक्षु की भूमिका में कार्य करने के लिए सहमत होते थे। बहुत से इतिहासकारों का अनुमान है कि अमरीका में आने वाले यूरोपीय, गोर प्रवासियों में से दो तिहाई नहीं तो कम से कम आधे लोग अमरीका में अनबंधित गुलामों के रूप में आए थे। अतः, यह तस्वीर उसके बहुत अधिक समान है जिसे हम पुराने नियम में इब्रानी गुलामी में देखते हैं।

अतः, आपके सामने पुराने नियम की इब्रानी गुलामी है। और फिर, नया नियम एवं यूनानी–रोमी गुलामी की पृष्ठभूमि है। फिर, आप अमरीकी उपनिवेश को देखते हैं और आप अनुबंधित गुलामी के बारे में सोचते हैं, और फिर आप अफ्रीकी गुलामों के व्यापार की ओर आते हैं जो 17वीं, 18वीं और 19वीं सदियों में प्रचलित था, जिसमें करोड़ों अफ्रीकियों को बेचकर गुलामों के रूप में यूरोप और अमरीका में लाया गया था। आप इतिहास जानते हैं कि उन्हें किस प्रकार क्रूर और वीभत्स तरीकों से लाया जाता था कि उनमें से बहुत से लोग बन्दरगाह पर पहुँचने से पहले यात्रा के दौरान ही मर जाते थे। फिर, गुलामी में बिकने के बाद, उन्हें बहुत बुरी दशाओं में कठोर मेहनत करनी पड़ती थी, और अक्सर शारीरिक एवं यौन उत्पीड़न एवं यातना का सामना करना पड़ता था।

फ्रेडरिक डगलस ने अपने पहले स्वामी, कप्तान एन्थोनी के बारे में इस प्रकार बताया। उसने कहा,

> वह एक क्रूर व्यक्ति था, जो लम्बे समय तक दासों को रखने के कारण कठोर बन गया था। कई बार ऐसा लगता था कि किसी गुलाम को कोड़े मारने में उसे बहुत सुख मिलता था। सुबह के समय मेरी नींद अक्सर मेरी अपनी एक आण्टी की हृदय–विदारक चीखों को सुनकर खुलती थी, जिसे वह एक कड़ी से बाँधकर तब तक कोड़े मारता रहता था जब तक वह लहुलूहान नहीं हो जाती थी। ऐसा प्रतीत होता था कि लहुलूहान पीड़ित के कोई

शब्द, कोई आँसू या कोई प्रार्थना उसके कठोर हृदय को उसके कठोर उद्देश्य से हिला नहीं सकती थी।

फिर, वह इसका और अधिक स्पष्टता से वर्णन करता है। मैं ने इसे केवल इसलिए पढ़ा है कि हम सब उस आतंक को याद करें जो संसार के इतिहास में ऐसे समुदायों में व्याप्त था, और मैं ने इसे यह स्पष्ट करने के लिए पढ़ा है कि पौलुस 1 तिमुथियुस 6 में इस प्रकार की गुलामी के बारे में बात नहीं कर रहा है।

यदि आपके मन में गुलामी की यह तस्वीर है तो 1 तिमुथियुस 6 में पौलुस की सलाह को पढ़ते समय हम दुविधा में पड़ जाएँगे। याद रखें, पौलुस यहाँ उन दासों से बात नहीं कर रहा है जो बाहर ऐसे स्थानों पर बैठे हैं, जहाँ उनका तिरस्कार किया जाता है और उन्हें यातना दी जाती है। इसके विपरीत, वह एक कलीसिया से बात कर रहा है, जहाँ दास और स्वामी उस देह में एक साथ बैठे हैं जिसमें उन्हें प्रतिदिन एक–दूसरे से प्रेम करने, एक–दूसरे की देखभाल करने, एक–दूसरे की सहायता करने और एक–दूसरे की जरूरतों को पूरा करने की आज्ञा दी गई है। वह उन्हें विशिष्ट निर्देश दे रहा है कि यह उस पापी पद्धति और पापी संसार में कैसा हो सकता है, जिसमें गुलाम और स्वामी शामिल हैं।

अतः, जब आप गुलामी की इस तस्वीर पर आते हैं, तो इस बात को मन में रखें। यदि 1 तिमुथियुस 6:1–2 पढ़ते समय आपके मन में तुरन्त वह तस्वीर आती है जिसका वर्णन फ्रेडरिक डगलस ने किया था, तो मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि आप उस तस्वीर को बदलना शुरू करें, अफ्रीकी दास व्यापार के इतिहास और उसके आतंक को छिपाने के लिए नहीं, परन्तु नये नियम के संसार को थोड़े बेहतर तरीके से समझने के लिए। संसार गुलामी की हर प्रकार की तस्वीरों से भरा है, और हमें धर्मशास्त्रीय इतिहास पर लाता है।

धर्मशास्त्रीय इतिहास दास प्रथा पर विभिन्न दृष्टिकोणों से भरा है।

जब आप इसके बारे में सोचते हैं, तो धर्मशास्त्रीय इतिहास भी दास प्रथा पर विभिन्न दृष्टिकोणों से भरा है, जैसे कि लैव्यवस्था पुराने नियम में जिस तरह इब्रानी दास प्रथा को संबोधित करती है, वह नये नियम में पौलुस द्वारा रोमी दास प्रथा को संबोधित करने के तरीके से अलग है। इन सारी बातों में, कुछ बातों को समझना आवश्यक हैः पहली, दास प्रथा सृष्टि का भाग नहीं है, यानि परमेश्वर के मूल क्रम का हिस्सा नहीं है, परन्तु दास प्रथा पाप का उत्पाद है। यही मुख्य बात है। आप उत्पत्ति 1–2 में देखें, आप पुरूष और स्त्री के बीच में अन्तर को देखते हैं, लेकिन वहाँ दास और स्वतंत्र के बीच में कोई अन्तर नहीं है। यह परमेश्वर

की मूल सृष्टि का हिस्सा नहीं है; यह पाप का उत्पाद है। जब आप अन्त में, स्वर्ग की तस्वीर में नई सृष्टि को देखने के लिए पवित्रशास्त्र में तेजी से आगे बढ़ते हैं, तो वहाँ कोई दास और स्वतंत्र नहीं है। वहाँ फिर पाप नहीं होगा, फिर दास प्रथा नहीं होगी। स्वर्ग में अनुबंधित गुलामी, वर्गीय युद्ध का कोई निशान नहीं होगा, जो यूनानी–रोमी दास प्रथा की ओर ले गई, और वहाँ कोई दुर्व्यवहार भी नहीं होगा जिसे हमने अफ्रीकी गुलामों के व्यापार के हमारे इतिहास में देखा है।

जहाँ पाप नहीं होता, वहाँ दास प्रथा नहीं होती। गुलामी पाप का उत्पाद है, और यह हमें इस अहसास की ओर लाता है कि जब हम बाइबल में दास प्रथा के वर्णन को देखते हैं, तो वहाँ पापी संसार में एक विशिष्ट परिस्थिति होती है जो पापी संसार के लिए विशिष्ट निर्देशों की माँग करती है। अतः, लैव्यवस्था और 1 तिमुथियुस में अलग–अलग परिस्थितियाँ हैं जो संसार में पाप की उपस्थिति को संबोधित करती हैं जिनके कारण संसार में गुलामी आती है, और यह हमें तीसरी बात की ओर लाता हैः अन्तिम अहसास कि गुलामी के संबंध में धर्मशास्त्रीय निर्देश का मतलब गुलामी की धर्मशास्त्रीय मान्यता नहीं है। यह मुख्य बात है।

इन सबको एक साथ जोड़ें। गुलामी परमेश्वर की मूल योजना और परमेश्वर की अन्तिम इच्छा नहीं है। यह संसार में पाप का एक उत्पाद है। अतः, उदाहरण के लिए, जब हम पौलुस को गुलामी के बारे में बात करते हुए देखते हैं तो इसका मतलब यह नहीं है कि वह इसका समर्थन कर रहा है। इसके विपरीत, वह उन चरवाहों की सहायता कर रहा है जो एक ऐसे पापी समाज में रहते हैं, जहाँ दास प्रथा व्याप्त है।

यह पहली बार नहीं है जब पवित्रशास्त्र कुछ ऐसा करता है। उदाहरण के लिए, आप तलाक के बारे में सोचें। तलाक परमेश्वर की मूल सृष्टि का हिस्सा नहीं है, किसी भी तरह से परमेश्वर की अन्तिम इच्छा का हिस्सा नहीं है। स्वर्ग में कोई तलाक या विवाह नहीं होगा। आदि में, उत्पत्ति 1 और 2 में, आप पुरूष और स्त्री को एक साथ जुड़ते हुए देखते हैं। पुरूषों और स्त्रियों का इस प्रकार अलग होना पाप का उत्पाद है, और तलाक एक यथार्थ बन जाता है। अतः, आप पवित्रशास्त्र में, पुराने नियम में और नये नियम में यीशु को भी तलाक के संबंध में निर्देश देते हुए देखते हैं। ऐसे निर्देशों का मतलब तलाक का समर्थन करना नहीं है। इसके विपरीत, वे यह बताते हैं कि संसार में पाप का प्रभाव क्या है और उसका जवाब कैसे देना है। अतः, गुलामी में भी हम इसी बात को देखते हैं।

अतः, मैं चाहता हूँ आप इसे देखें कि जब बाइबल इस प्रकार दास प्रथा को संबोधित करती है, तो वह इसे संसार में पाप के उत्पाद के रूप में एवं विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न तरीकों से संबोधित करती है। यह सब इसे समझने में हमारी सहायता करता है कि 1 तिमुथियुस 6 में क्या हो रहा है। हम 1 तिमुथियुस 6

की ओर जा रहे हैं, लेकिन मैं एक प्रकार से हमें दास प्रथा पर परमेश्वर के वचन की सम्पूर्ण तस्वीर के साथ यहीं पर रखना चाहता हूँ, क्योंकि जब पवित्रशास्त्र में दास प्रथा की बात आती है तो इससे हमें यह समझने में सहायता मिलेगी कि इन दो वचनों का क्या मतलब है।

पवित्रशास्त्र में दास प्रथा...

बाइबल दास प्रथा की निन्दा करती है।

सबसे पहले मैं चाहता हूँ आप इस बात को देखें कि स्पष्ट तरीकों से बाइबल दास प्रथा की निन्दा करती है। बाइबल उन्हीं कारणों से दास प्रथा की निन्दा करती है जिनके बारे में हम अभी सृष्टि के संबंध में बात कर रहे थे। बाइबल दास प्रथा की निन्दा करती है जो परमेश्वर की सृष्टि के महत्व को कम करती है। हमारे पास उत्पत्ति 1:27 में जाने का समय नहीं है, लेकिन आप इसे जानते हैं: *"तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।"* परमेश्वर ने पुरूषों और स्त्रियों को परमेश्वर के सामने समान प्रतिष्ठा के साथ रचा है, और दास प्रथा सहित, जो भी बात उस प्रतिष्ठा को कम करती है, वह उस प्रतिष्ठा से इन्कार करती है और परमेश्वर का अनादर करती है। यह लिंकन का विचार नहीं था कि सब लोगों को समान रूप से सृजा गया है। यह परमेश्वर का विचार था।

आप अय्यूब 31:15 को लिख सकते हैं। अय्यूब एक दास के बारे में बता रहा है; अतः, पुराने नियम में अय्यूब के पास दास थे, इब्रानी दास प्रथा। वह अय्यूब 31:15 में इसके बारे में बात कर रहा है, और वह कहता है, *"क्या वह उसका बनाने वाला नहीं जिसने मुझे गर्भ में बनाया, क्या एक ही ने हम दोनों की सूरत गर्भ में न रची थी?"* इसका आशय यह है कि परमेश्वर के सामने हमारी प्रतिष्ठा समान है, और यह केवल पुराने नियम में ही नहीं है।

यह नये नियम में भी है। गलातियों 3:28 में, पौलुस कहता है, *"मसीह में न तो कोई यहूदी है और न यूनानी; न कोई दास और न स्वतंत्र; न कोई नर, और न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।"* हाँ, हम में भिन्नताएँ हैं, लेकिन परमेश्वर के सामने हमारी प्रतिष्ठा समान है और मसीह में हमारा स्थान बराबर है। इसी आधार पर याकूब 2 में, याकूब कहता है, *"पक्षपात न करो।"* परमेश्वर के सामने हम सबकी

प्रतिष्ठा समान है। यही वे क्षेत्र हैं जहाँ शायद बाइबल गुलामी के सारे रूपों का व्यक्त रूप में निषेध नहीं करती है, परन्तु यह पूरी तरह से दास प्रथा के आधार को चकनाचूर करती है, जो कहता है कि परमेश्वर के सामने एक व्यक्ति की प्रतिष्ठा दूसरे से अधिक है, एक व्यक्ति का मूल्य दूसरे से अधिक है, और दास प्रथा सहित, जहाँ भी यह होता है, उसकी परमेश्वर द्वारा अपने वचन में निन्दा की गई है। अतः, पहली बात, परमेश्वर के सामने हम सबकी प्रतिष्ठा समान है।

दूसरी बात, हम सब एक समान परमेश्वर के अधीन हैं। इसके बारे में दासों और स्वामियों को दी गई पौलुस की सलाह को देखें, नये नियम में दासों और स्वामियों दोनों से वह कहता है, "तुम जो कुछ करते हो वह परमेश्वर के प्रति भक्ति और परमेश्वर के प्रति अधीनता के कारण करो।" मैं आपको वचनों की एक सूची देता हूँ: कुलुस्सियों 3:22: *"हे सेवको, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में उनकी आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों को प्रसन्न करने वालों की नाईं दिखाने के लिए नहीं, परन्तु मन की सीधाई और परमेश्वर के भय से। और जो कुछ तुम करते हो, तन–मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु प्रभु के लिए करते हो।"* अन्तिम रूप से तुम परमेश्वर के अधीन हो। इफिसियों 6:5–9: *"हे दासो, जो लोग शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, अपने मन की सीधाई से डरते और काँपते हुए, जैसे मसीह की, वैसे ही उनकी भी आज्ञा मानो।"* कुलुस्सियों 4:1: *"हे स्वामियों, अपने–अपने दासों के साथ न्याय और ठीक–ठीक व्यवहार करो, यह समझकर कि स्वर्ग में तुम्हारा भी एक स्वामी है।"*

यह मुख्य वचन है। यह तीसरे यथार्थ की ओर लाता है। न केवल परमेश्वर के सामने हमारी प्रतिष्ठा समान है और हम समान रूप से परमेश्वर के अधीन हैं, परन्तु हमें परमेश्वर से समान न्याय प्राप्त होगा। परमेश्वर अपने वचन में पौलुस के द्वारा स्वामियों से कहता है, "मत भूलो कि तुम्हारा भी एक स्वामी है।" इफिसियों 6:9: *"हे स्वामियों, तुम भी धमकियाँ छोड़कर उनके साथ वैसा ही व्यवहार करो, क्योंकि जानते हो, कि उनका और तुम्हारा दोनों का स्वामी स्वर्ग में है, और वह किसी का पक्ष नहीं करता।"* दूसरे शब्दों में, "स्वामियों, तुम्हारा एक स्वामी है जो अपने घर में दासों के साथ किए गए व्यवहार के आधार तुम्हारे साथ न्याय का व्यवहार करेगा, और दासो, यहाँ प्रोत्साहन यह है कि यद्यपि थोड़े समय के लिए तुम्हें अन्याय सहना पड़ सकता है, लेकिन यह निश्चित है कि एक अनन्त न्याय होगा।"

यह सब बहुत विशाल है। यहाँ बाइबल शायद व्यक्त रूप में गुलामी का निषेध नहीं कर होगी, लेकिन यह गुलामी की नींव पर हमला करती है। यथार्थ यह है कि एक नया आकाश और नई पृथ्वी आ रहे हैं, और

एक दिन होगा जब हमें यह अहसास होगा कि परमेश्वर के सामने हमारी प्रतिष्ठा समान है, हम समान रूप से परमेश्वर के अधीन हैं, हम समान रूप से उसके न्याय के अधीन हैं, और फिर गुलामी नहीं होगी।

अतः, बाइबल परमेश्वर की सृष्टि के महत्व को कम करने वाली गुलामी की निन्दा करती है और परमेश्वर के वचन को तोड़ने वाली गुलामी की निन्दा करती है। यहाँ पर मैं आपको दिखाना चाहता हूँ कि बाइबल साफ और स्पष्ट शब्दों में विशिष्ट एवं अखण्डनीय तरीकों से दास प्रथा के विरूद्ध बोलती है। विशेष रूप से दो बातें हैंः पहली, पूरे पवित्रशास्त्र में बाइबल शारीरिक प्रताड़ना की भर्त्सना करती है। आपस में प्रेम करो। एक–दूसरे को चोट मत पहुँचाओ। आपस में दुर्व्यवहार मत करो, विशेष रूप से गुलामी के संबंध में। आप लैव्यवस्था में थे। अब मेरे साथ निर्गमन 21 पर आएँ। मैं चाहता हूँ आप वहाँ विशेष रूप से दुर्व्यवहार के संबंध में गुलामी पर परमेश्वर की व्यवस्था को लागू होते हुए देखें।

यह निर्गमन 20 में दस आज्ञाओं के ठीक बाद है। फिर, परमेश्वर अपने लोगों के लिए अतिरिक्त नियमों को बताता है, और वह निर्गमन 21 में दासों के बारे में यह व्यवस्था देता है। मेरे साथ पद 26 को देखें। यहाँ बहुत कुछ है, हमारे पास इन सबका अध्ययन करने का समय नहीं है, लेकिन पद 26–27 को देखें। दासों से दुर्व्यवहार के संबंध में परमेश्वर कहता है, *"जब कोई अपने दास या दासी की आँख पर ऐसा मारे कि फूट जाए, तो वह उसकी आँख के बदले में उसे स्वतंत्र होकर जाने दे। और यदि वह अपने दास या दासी को मारकर उसका दाँत तोड़ डाले, तो वह उसके दाँत के बदले में उसे स्वतंत्र होकर जाने दे।"* दूसरे शब्दों में, यदि तुम एक दास को हानि पहुँचाते हो, तो तुम एक दास को खो दोगे। यह सहनीय नहीं है। आप पीछे की ओर जाएँ, पद 20 में यह और भी गम्भीर हैः *"यदि कोई अपने दास या दासी को सोंटे से ऐसा मारे कि उसके मारने से वह मर जाए, तब तो उसको निश्चय दण्ड दिया जाए।"*

यहाँ का मुख्य शब्दः बदला लिया जाएगा। आप देखते हैं कि यदि कोई व्यक्ति किसी दास को मारता है और वह दास मर जाता है, तो पलटा लेते समय उस दास का स्वामी भी मर जाता है। अतः, यहाँ पूरी तस्वीर यह है कि यदि एक स्वामी दास को पीटता है, दास की हत्या करता है, तो स्वामी भी मरेगा। यह मृत्युदण्ड है। अतः, बाइबल स्पष्टता से स्वामियों द्वारा दासों या सेवकों की शारीरिक प्रताड़ना की भर्त्सना करती है, सीधे परमेश्वर द्वारा उसकी निन्दा की गई है।

यह केवल शारीरिक प्रताड़ना के बारे में ही नहीं है, आगे बढ़ते रहें। बाइबल मानव तस्करी की भी भर्त्सना करती है। आप पद 16 में देखें। मानवीय तस्करी मूलतः, लोगों को गुलामी में खरीदना, बेचना, और चुराना

है। निर्गमन 21:16 में लिखा है, *"जो किसी मनुष्य को चुराए, चाहे उसे ले जाकर बेच डाले, चाहे वह उसके पास पाया जाए, तो वह भी निश्चय मार डाला जाए।"* दूसरे शब्दों में, पवित्रशास्त्र में मानव तस्करी मृत्युदण्ड के योग्य अपराध है।

अब, एक पल के लिए हम अपने आधार वचन की ओर आते हैं। मेरे साथ 1 तिमुथियुस पर चलें; 1 तिमुथियुस 1 को देखें। जब हम 1 तिमुथियुस के पहले भाग को देख रहे थे, तब हमने इसे पढ़ा था, परन्तु मैं आपको वापस वहाँ ले जाना चाहता हूँ, ताकि आप देख सकें कि पौलुस इस प्रकार की गुलामी को 1 तिमुथियुस 1 में पहले ही संबोधित कर चुका है। 1 तिमुथियुस 1:8 देखें। हम पद 10 में उस पर पहुँचेंगे। 1 तिमुथियुस 1:8 कहता है,

> *पर हम जानते हैं, कि यदि कोई व्यवस्था को व्यवस्था की रीति पर काम में लाए, तो वह भली है। यह जानकर कि व्यवस्था धर्मी जन के लिए नहीं, पर अधर्मियों, निरंकुशों, भक्तिहीनों, पापियों, अपवित्रों और अशुद्धों, माँ–बाप के घात करने वालों, हत्यारों, व्यभिचारियों, पुरूषगामियों मनुष्य के बेचने वालों, झूठों, और झूठी शपथ खाने वालों, और इन को छोड़ खरे उपदेश के सब विरोधियों के लिए ठहराई गई है।*

जो व्यक्ति विक्रय के लिए लोगों का अपहरण करता है, वह अशुद्ध, अपवित्र है, और वह सुसमाचार का इन्कार करता है। अतः, मैं चाहता हूँ आप स्पष्टता से इसे देखें कि बाइबल शारीरिक प्रताड़ना और मानव तस्करी की निन्दा करती है। मैं दो कारणों से इस पर बल देना चाहता हूँ। पहला, यदि पुराने नियम और नये नियम में समान रूप से दिए गए शारीरिक प्रताड़ना और मानवीय तस्करी से संबंधित इन दो सत्यों को 18वीं और 19वीं सदी के मसीहियों ने अपनाया होता, तो दक्षिण में दास प्रथा कभी अस्तित्व में नहीं आ सकती थी। दक्षिणी संयुक्त राज्य में जिस प्रकार की दास प्रथा थी, बाइबल स्पष्टता से उसकी भर्त्सना और निन्दा करती है, और अपनी रीतियों को सही ठहराने के लिए परमेश्वर के वचन का उपयोग करने वाले पासबान और कलीसियाई सदस्य पाप में जी रहे थे।

अफ्रीकी गुलामों के व्यापार में जिन रीतियों को बढ़ावा दिया जाता था, पौलुस स्पष्टतः उन्हें घृणित मानता था, उसे परमेश्वर के वचन का उल्लंघन और परमेश्वर के सुसमाचार का इन्कार मानता था। इसे स्पष्ट करने का पहला कारण यही है। दूसरा कारण, और मैं इसे इसलिए स्पष्ट करना चाहता हूँ क्योंकि ऐसी गुलामी, शारीरिक प्रताड़ना और मानव तस्करी केवल अतीत की बात ही नहीं है। इस प्रकार की गुलामी

आज भी संसार में है। यह केवल इतिहास का ही भाग नहीं है। आँकड़ों के अनुसार आज लगभग दो करोड़ सत्तर लाख गुलाम हैं। मानव तस्करी, जिसमें क्रय, विक्रय, व्यापार, और जबरन मजदूरी या देह व्यापार के लिए लोगों का शोषण करना आज संसार का दूसरा सबसे बड़ा और तेजी से बढ़ता हुआ आपराधिक उद्योग है।

आँकड़े बताते हैंः आज संसार में करोड़ों मानव तस्करी के शिकारों में से लगभग अस्सी प्रतिशत स्त्रियाँ और लड़कियाँ होती हैं, और उनमें से आधी अवयस्क होती हैं। यूनीसेफ के अनुसार, पिछले तीस वर्षों में मानव तस्करी के माध्यम से तीन करोड़ से अधिक बच्चों का यौन उत्पीड़न किया गया है। इस पल, अक्षरशः, करोड़ों बच्चे देह व्यापार में फँसे हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैंः पिछले एक दशक में एक लाख से अधिक नेपाली लड़कियों को भारत के रेड लाइट क्षेत्र में बेचा गया है, जिनमें नौ वर्ष की उम्र वाली लड़कियाँ भी शामिल हैं। वर्तमान में, श्रीलंका के वेश्यालयों में छह से चौदह वर्ष के बीच की आयु के 10,000 से अधिक बच्चे हैं। मानव तस्करी सर्वाधिक तेजी से बढ़ने वाले आपराधिक उद्यमों से एक है क्योंकि इसमें तुलनात्मक रूप से कम खतरा और अधिक लाभ की क्षमता होती है। आपराधिक संगठन मानव तस्करी की ओर तेजी से आकर्षित होते हैं क्योंकि नशीली दवाओं के विपरीत मनुष्यों को बार–बार बेचा जा सकता है। मानव तस्करी संयुक्त राज्य और संसार भर में इस सदी की मानवाधिकारों की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है।

अतः, विश्वास के परिवार के रूप में मैं चाहता हूँ कि हम यह महसूस करें कि यह संसार की एक वास्तविकता है, और यह देखें कि बाइबल इसकी निन्दा करती है, और इसलिए, बाइबल पर विश्वास करने वाले मसीहियों को इसके विरूद्ध खड़े होना चाहिए। जैसे हम यह कामना कर सकते हैं कि काश हमारे पुरखों ने इस वचन को काम में लिया होता, उसी प्रकार मैं हम सबसे कहना चाहता हूँ कि हम इसे हमारे समय में काम में लाएँ। भाइयो और बहनो, यह कुछ ऐसा नहीं है जिससे हमें अपने आप को बचाने या अलग करने की जरूरत हो। यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में बाइबल स्पष्टता से बताती है, और इस वचन के सेवकों के रूप में, हमें भी स्पष्टता से बोलना है। अतः, मैं उसे आपके सामने रखना चाहता हूँ और पवित्र आत्मा से कहें कि वह आपकी अगुवाई और मार्गदर्शन करे कि मसीह के अनुयायी के रूप में आप सोचें कि यह आपके लिए कैसा हो सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय न्याय मिशन और दूसरे बहुत से संगठनों के साथ–साथ हमारे शहर के लोग भी इसके विरूद्ध संघर्ष कर रहे हैं। हम इसे अनदेखा नहीं कर सकते हैं या यह दिखावा नहीं कर सकते हैं कि ऐसा नहीं है। बाइबल इस प्रकार की दास प्रथा की स्पष्टता से निन्दा करती है।

बाइबल दास प्रथा को नियंत्रित करती है।

अतः, अनुबंधित, इब्रानी दास प्रथा या रोमी गुलामी के किसी स्वरूप के बारे में सोचें जहाँ लोग स्वेच्छा से सेवक और दास बनते थे, और उन मामलों में बाइबल दास प्रथा को नियंत्रित करती है। जिस प्रकार हम बाइबल को तलाक को नियंत्रित करते हुए देखते हैं, उसी प्रकार बाइबल दास प्रथा को नियंत्रित करती है। हम इनमें से कुछ को पहले ही देख चुके हैं। हम इसमें से तेजी से आगे बढ़ेंगे और आप चाहें तो कुछ वचनों को लिख सकते हैं, परन्तु मैं चाहता हूँ आप इसे देखें कि परमेश्वर अपने वचन में इसे कैसे करता है। परमेश्वर दासों की शारीरिक सुरक्षा को सुनिश्चित करता है। निर्गमन 21 में हमने इसे देखा था। जिन दासों के साथ स्वामियों द्वारा दुर्व्यवहार किया जाता था उन्हें तुरन्त ही स्वतंत्र किया जाना था और उनकी चोटों की क्षतिपूर्ति की जाती थी। वह दासों के लिए आर्थिक प्रबन्ध की माँग करता है। आप लैव्यवस्था 25 में जाएँ जहाँ से हमने शुरू किया था, और देखें कि जो निर्धन इब्रानी दास अपने आप को किसी स्वामी के हाथ बेच देते थे उनकी जरूरतों को पूरा करना जरूरी था। 2 शमूएल 9:9–10 दासों के आर्थिक अधिकारों के बारे में बताता है और उसमें स्वयं के दासों को रखने का अधिकार भी शामिल है।

तीसरा, परमेश्वर दासों के उदार निरीक्षण को सुनिश्चित करता है। लैव्यवस्था 25 बताता है कि स्वामियों को अपने दासों के साथ कठोरता का नहीं परन्तु सावधान से व्यवहार करना है। निर्गमन 20:10 बताता है कि कैसे परमेश्वर चाहता था कि उसके सारे लोग सब्त का आनन्द लें और उसके अनुयायियों के रूप में उन्नति करें। आप उत्पत्ति 15, 2 राजा 4, और 2 राजा 8 में स्वामियों और दासों के बीच कुछ अत्यधिक घनिष्ट संबंधों को भी देखते हैं। अतः, परमेश्वर दासों के उदार निरीक्षण को सुनिश्चित करता है, और फिर, अन्ततः, परमेश्वर गुलामी से छुटकारे को बढ़ावा देता है और कुछ तरीकों से इसका निश्चय दिलाता है।

हमने संक्षेप में लैव्यवस्था 25, निर्गमन 21, और व्यवस्थाविवरण 15 के बारे में बात की कि एक इब्रानी सेवक को या एक इब्रानी दास को छह वर्ष से अधिक समय तक नहीं रखा जा सकता था जब तक कि वह स्वयं अपनी इच्छा से दास बने रहने को न चुने, और प्रत्येक सातवें वर्ष में इस्राएल के सारे दासों को स्वतंत्र कर दिया जाता था। न केवल उन्हें स्वतंत्र किया जाता था बल्कि उनका कर्ज भी माफ कर दिया जाता था। और यदि कोई चाहता तो उसी दशा में रहने का निर्णय ले सकता था, यदि यह उसके एवं उसके परिवार के अच्छा था, लेकिन उनके लिए उस दशा में रहना जरूरी नहीं था। परमेश्वर गुलामी से निकलने के लिए विशिष्ट मार्ग उपलब्ध करवा रहा था, और उसने अपने लोगों को गुलामी में फँसने से बचाने के लिए अपने लोगों के लिए नियम भी ठहराए थे, जैसे कटनी के समय निर्धन के लिए फसल और भोजन को छोड़ना,

ताकि वे देश के फलों में से कुछ खा सकें और उन्हें निर्धनता से बचाने के लिए परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए दूसरी बातें भी निर्धारित की थी। हमारे पास उन सबको देखने का समय नहीं है।

व्यवस्थाविवरण 15 में, परमेश्वर पुनः कहता है, "मैं तुम्हारे बीच में निर्धनता नहीं चाहता, और मेरे लोगों के बीच में निर्धनता के चक्र को विकसित होने से रोकने का तरीका यह है।" यह सब उस दिन का एक पूर्व स्वाद है, जब निर्धनता नहीं रहेगी और गुलामी की तस्वीर नहीं होगी, इसी कारण 1 कुरिन्थियों 7 में पौलुस उन दासों को स्वतंत्र होने के लिए प्रोत्साहित करता है जिनके पास ऐसा करने का अवसर है। अतः, परमेश्वर गुलामी से स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है, और कई तरीकों से इसका निश्चय देता है। इस प्रकार, बाइबल दास प्रथा को नियंत्रित करती है।

बाइबल दासों को प्रोत्साहन देती है।

अब, इस पृष्ठभूमि के साथ, हम 1 तिमुथियुस 6:1–2 पर आते हैं, जहाँ बाइबल दासों को प्रोत्साहित करती है। मेरी आशा है कि अभी हमने जो देखा है, उसके प्रकाश में, इस परिच्छेद के बारे में हमारे दृष्टिकोण में थोड़ा बदलाव आया है। अब, हमने बाइबल में दास प्रथा के प्रत्येक वर्णन को नहीं देखा है, लेकिन मेरी आशा है कि हमने विभिन्न प्रकार की दास प्रथा को, दास प्रथा की विभिन्न तस्वीरों को, और बाइबल द्वारा दास प्रथा के संबोधन को देख लिया है, लेकिन परमेश्वर की सृष्टि या परमेश्वर की अन्तिम इच्छा के मूल हिस्से के रूप में नहीं, बल्कि एक पापी संसार में पाप के एक उत्पाद के रूप में।

अतः पौलुस यह जानते हुए विशेषतः दासों को संबोधित करता है कि इफिसुस में परमेश्वर के लोगों की मण्डली में दास और स्वामी एक साथ बैठे हैं। हम परिच्छेद की गहराई में नहीं जा रहे हैं जहाँ वह स्वामियों से बात करता है, लेकिन यहाँ वह विशेष रूप से दासों से बात करता है, और उन्हें दो प्रकार से प्रोत्साहित करता है। वह उन्हें अपने <u>अविश्वासी स्वामियों का आदर करने के लिए</u> प्रोत्साहित करता है। पहले वचन में, वह अविश्वासी स्वामियों के साथ अविश्वासी दासों के बारे में बात करता है, और दूसरे वचन में वह उन दासों के बारे में बात करता है जिनके स्वामी विश्वास करने वाले हैं। पहले वचन में वह कहता है, *"...अपने स्वामियों को बड़े आदर के योग्य जानो..."* पिछले कुछ सप्ताहों में हमने उसे इस शब्द का प्रयोग करते हुए देखा है जब वह परमेश्वर के परिवार में एक–दूसरे का आदर करने, विधवाओं का आदर करने, प्राचीनों का आदर करने की बात करता है, और अब स्वामियों का आदर और सम्मान करना। उसी बात के आधार पर जिसे हम देख चुके हैं, इस तथ्य के आधार पर कि परमेश्वर के सामने उनकी समान प्रतिष्ठा है, और उन्हें परमेश्वर से न्याय मिलेगा।

अतः, सुनें वह क्या कहता है। वह कहता है, *"उन्हें आदर दो ताकि..."* यहाँ एक उद्देश्य है। "पौलुस, एक दास के रूप में मैं एक अविश्वासी स्वामी, या एक अधर्मी स्वामी को आदर क्यों दूँ?" कारण यह हैः पौलुस कहता है, *"ताकि परमेश्वर के नाम और उपदेश की निन्दा न हो।"* पौलुस कहता है इसे दो कारणों से करो। एक, परमेश्वर की महिमा के लिए। यही पौलुस को प्रेरित करता है। पूरे नये नियम में और पूरे पहले तिमुथियुस में, 1 तिमुथियुस 2 में वह पहले ही कह चुका है, *"इस तरह प्रार्थना करो क्योंकि इससे परमेश्वर प्रसन्न होता है।"* अध्याय तीन में वह कहता है, "प्राचीनों इस तरह अगुवाई करो ताकि परमेश्वर की निन्दा न हो।" 1 तिमुथियुस 5 में उसने कहा, "परमेश्वर को प्रसन्न करने और पापी संसार द्वारा परमेश्वर की निन्दा न होने के लिए विधवाओं की देखभाल करो।" अतः, वह कहता है, *"परमेश्वर की महिमा के लिए यह करो।"* पौलुस की गहनतम चिन्ता दासों के बीच में परमेश्वर की महिमा है; यही यहाँ पर उसे प्रेरित करता है। वह चाहता है कि विश्वास न करने वाले स्वामी मसीही दासों को देखें और उनमें परमेश्वर की करूणा और भलाई और प्रेम और महिमा को देखें।

यही वह स्थान है जहाँ हम एक पल के लिए रूक सकते हैं। हाँ, यहाँ निःसन्देह दास प्रथा के बारे में बात हो रही है, लेकिन मैं अपने आप को उन लोगों के बारे में सोचने से नहीं रोक पा रहा हूँ जिनके अधिकारी ऐसे लोग हैं जो विश्वास नहीं करते हैं, और वे छात्र जिनके अध्यापक विश्वास नहीं करते हैं। पवित्रशास्त्र निश्चित रूप से आप से कह रहा है, कि आप अपने विश्वास न करने वाले अधिकारी या शिक्षक का सम्मान करें ताकि जब वे आप को देखें, तो वे परमेश्वर की भलाई और प्रेम और करूणा और महिमा की तस्वीर को देख सकें। यह महसूस करना कि जब छात्रों की बात आती है, तो मसीह के चेलों के रूप में आपके द्वारा किए जाने वाले हर एक कार्य में मसीह की महिमा का प्रतिबिम्ब होना चाहिए। हर एक परियोजना जिस पर आप काम करते हैं, हर एक ईमेल जो आप भेजते हैं, हर एक सभा जिसमें आप मसीह के एक अनुयायी के रूप में बैठते हैं, उनमें मसीह की महिमा का प्रतिबिम्ब होना चाहिए। उन लोगों के लिए जिनके अधिकारी अविश्वासी हैं, आप आसान न होने पर भी उन्हें परमेश्वर की भलाई, करूणा और महिमा की तस्वीर दिखाएँ।

1 पतरस 2:18–20 में पतरस यही कहता है। वह कहता है, *"हे सेवको, हर प्रकार के भय के साथ अपने स्वामियों के अधीन रहो, न केवल भलों और नम्रों के, पर कुटिलों के भी।"* पतरस कहता है, *"क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय से दुख उठाता हुआ क्लेश सहता है, तो यह सुहावना है। क्योंकि यदि तुमने अपराध करके घूँसे खाए और धीरज धरा, तो उस में क्या बड़ाई की बात है? पर यदि भला काम*

करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है।" इस सप्ताह एक अविश्वासी शिक्षक या अधिकारी के सामने आप जो कुछ करते हैं, वह परमेश्वर की महिमा के लिए, परमेश्वर के अनुग्रह में किया जाए। पौलुस कहता है, "दासों, अपने अविश्वासी स्वामियों के सामने परमेश्वर का अपमान मत करो। उनका आदर करने के द्वारा उन्हें परमेश्वर की महिमा दिखाओ।" फिर वह कहता है, "यह परमेश्वर की महिमा और सुसमाचार के प्रसार के लिए करो।"

तीतुस 2:9–10 में पौलुस यही कहता है। वह कहता है, *"...अपने–अपने स्वामी के अधीन रहें...और सब बातों में हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर के उपदेश की शोभा दें।"* कितना महान वाक्यांश है, "तुम्हारा कार्य सुसमाचार की शोभा बने।" कठिन परिश्रम के द्वारा अविश्वासी स्वामियों का आदर करो; परमेश्वर की महिमा और सुसमाचार के प्रसार के लिए कठिन परिश्रम के द्वारा अविश्वासी शिक्षकों और अधिकारियों का आदर करो। यहीं पर हमें यह अहसास होता है कि पौलुस द्वारा 1 तिमुथियुस 6 में इस प्रकार बात करना हमें इस तथ्य को दिखाता है कि मसीहियत का प्राथमिक लक्ष्य समाज सुधार नहीं है। यदि मसीहियत का अन्तिम लक्ष्य सामाजिक संरचनाओं को बदलना होता, तो हम पौलुस से ऐसा कहने की अपेक्षा नहीं कर सकते थे। हम यह अपेक्षा करते कि पौलुस उन्हें दास प्रथा के विरूद्ध कार्य करने का उपदेश देता।

अब, यह ध्यान रखें कि वह दासों की तस्करी की पहले ही भर्त्सना कर चुका है; यहाँ वह उसके बारे में बात नहीं कर रहा है। वह कहता है, "यहाँ, अपने स्वामियों के उद्धार के लिए जीयो क्योंकि मसीहियत मुख्यतः सामाजिक सुधार के बारे में नहीं है। मसीहियत का प्राथमिक लक्ष्य व्यक्तिगत छुटकारा है।" जब लोग छुटकारा पाते हैं, तो सामाजिक संरचनाओं में बदलाव होने लगता है, और बाइबल इसी प्रकार व्यक्तिगत छुटकारे एवं व्यक्तिगत रूपान्तरण के लक्ष्य के साथ दास प्रथा को संबोधित करती है। आप इसके बारे में सोचें। जितने लोग मसीह में आते हैं वे विश्वास के समुदाय में जुड़ जाते हैं, जहाँ वे भाई हैं, न तो कोई दास है और न स्वतंत्र, न यहूदी और न यूनानी, वे आपस में प्रेम करते हैं, एक–दूसरे की देखभाल करते हैं, एक–दूसरे की सहायता करते हैं, और एक–दूसरे की सेवा करते हैं। यह जितना अधिक होता है, उतने ही अधिक हृदयों का रूपान्तरण होता है, और रोमी गुलामी की जड़ें उतनी ही अधिक कटती जाती हैं। एक लेखक कहता है, "एक प्रकार से, सुसमाचार विस्फोटक को रखता है जो अन्तिम रूप से विस्फोट और गुलामी के विनाश की ओर ले जाता है।"

अतः, परमेश्वर की महिमा और सुसमाचार के प्रसार के लिए अपने अविश्वासी स्वामियों का आदर करो, क्योंकि अविश्वासी और अन्यायी स्वामियों को परमेश्वर के प्रेम और परमेश्वर की करूणा और परमेश्वर की

भलाई और परमेश्वर की महिमा को जानने की जरूरत है; विशेष रूप से अविश्वासी स्वामियों को; अविश्वासी अधिकारियों को इसकी जरूरत है।

फिर, वह कहता है, "विश्वासी स्वामियों को सम्मान दो।" स्पष्टतः, इसका एक कारण यह था कि इफिसुस में मसीही स्वामियों के ऐसे मसीही सेवक और दास थे जो कह रहे थे, "मेरा स्वामी एक मसीही है, इसलिए मैं सुस्ती से काम करूँगा। मैं कठिन मेहनत नहीं करूँगा। मैं उन्हें उतना सम्मान नहीं दूँगा क्योंकि मसीह में वे मेरे भाई और बहन हैं।" पौलुस कहता है, "नहीं, तुम्हें अधिक करना है क्योंकि वे मसीह में तुम्हारे भाई या बहन हैं। उनकी सेवा में और अधिक मेहनत करो।"

इसी प्रकार, यदि आप का अधिकारी मसीह पर विश्वास करने वाला है तो यह न सोचें, "अब मैं वह सब कर सकता हूँ जो पहले नहीं कर सकता था क्योंकि यहाँ सब लोग मसीह में मेरे भाई और बहनें हैं। हम एक ही कलीसिया के सदस्य हैं, तो जरूर वे इसमें मुझे थोड़ी ढ़ील देंगे।" पौलुस कहता है, "ऐसी सोच को अपने मन में न आने दो।"

यदि आप एक छात्र हैं, तो यह न सोचें कि आप अपने किसी कार्य को देरी से जमा कर सकते हैं; और यह कह सकते हैं, कि "मैं डेविड प्लैट के लम्बे प्रचार को सुन रहा था इसलिए, इस कार्य को समय पर नहीं कर पाया।" बाइबल स्पष्टतः ऐसी सोच का निषेध करती है। यदि आप का अधिकारी विश्वास करने वाला है, एक मसीही अधिकारी या एक मसीही शिक्षक है, तो आप से अधिक मेहनत करने और अच्छी तरह सेवा करने की माँग की गई है। वह कहता है, पूरे मन से कार्य करो; सुस्त मत रहो। पूरे मन से कार्य करो। इसके विपरीत करना बाइबल के विरूद्ध होगा। साथ ही, निःस्वार्थ सेवा करो। वह मसीह में तुम्हारा भाई या तुम्हारी बहन है। उनकी अच्छी तरह सेवा करो। पौलुस कहता है, उनकी और अधिक सेवा करो एवं और अधिक सम्मान दो, क्योंकि वह मसीह में तुम्हारा भाई या तुम्हारी बहन है।

बाइबल दास प्रथा को छुटकारा देती है।

अतः, इस प्रकार, बाइबल दासों को प्रोत्साहित करती है। अन्ततः, बाइबल दास प्रथा को छुटकारा देती है, यानि, दूसरी बहुत सी बातों के समान जो संसार में पाप का उत्पाद हैं, परमेश्वर दास प्रथा को लेकर उसे अपने लोगों के लिए परमेश्वर की भलाई की एक तस्वीर में बदल देता है।

अब, हमें मसीह की खूबसूरती और सुसमाचार के यथार्थ का अहसास है। भाइयो और बहनो, हमारा स्वामी, हमारा परमेश्वर, हमारा राजा, हमारा प्रभु, हमारा स्वामी हमारा सेवक बन गया है। फिलिप्पियों 2 में पौलुस कहता है, *"...मसीह यीशु...जिसने परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा; वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया और दास का स्वरूप धारण किया..."* यहाँ सेवक के लिए उसी शब्द "डूलोस" का प्रयोग किया गया है, जिसका प्रयोग 1 तिमुथियुस 6:1 में किया गया है। हमारा दास बनने के द्वारा मसीह हमारा मुक्तिदाता बना। आपको याद होगा, जब हम यूहन्ना 13 में प्रभु भोज के बारे में सोचते हैं, उस समय यीशु अपने चेलों के साथ था और उसने अपने वस्त्र उतारे और कमर में एक अंगोछा बाँधकर, अपने चेलों के पाँव धोने लगा। वह एक दास था, और वह उनकी सेवा कर रहा था। मरकुस 10:45 में उसने अपने चेलों से कहा, *"क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे।"*

यीशु हमसे अपनी सेवा करवाने के लिए नहीं परन्तु हमारी सेवा करने के लिए आया था। इस बात को अपने मन में बैठा लें। कितना महिमामय यथार्थ है कि ब्रह्माण्ड का परमेश्वर, संसार का सृष्टिकर्ता, सारी सृष्टि का न्यायी और शासक, आप का सेवक बनने के लिए; आप का दास बनने के लिए उतर आया। आप कहेंगे, "क्या यह परमेश्वर के बारे में बताने के लिए कुछ ज्यादा ही कठोर कथन नहीं है?"

उसने मानवीय शरीर का परिधान पहना और आपके सारे अपराध बोध और आपकी लज्जा और आपके सारे पापों की गन्दगी को अपने ऊपर ले लिया। वह क्रूस पर चढ़ा और उसने कीमत चुकाई। वह आपके सेवक के रूप में आपकी जगह खड़ा हुआ, ताकि आपको छुटकारा मिल सके। यह "छुटकारे" का शब्द गुलामी की एक तस्वीर है। जब हम छुटकारे की बात करते हैं, तो छुड़ाने का अर्थ है, कुछ खरीदना, छुटकारे की कीमत चुकाना।

आप और मैं पाप के दास थे। यूहन्ना 8:34 में यीशु ने कहा, *"जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है।"* हम पाप के दास थे। रोमियों 6:11 कहता है, *"हम पाप, अशुद्धता, और दुष्टता के दास थे।"* 2 तिमुथियुस 2:26 कहता है, *"शैतान ने अपनी इच्छा पूरी करने के लिए हमें अपने फन्दे में फँसा रखा था।"* 1 यूहन्ना 5:9 कहता है, *"यह संसार दुष्ट की सामर्थ के अधीन है।"* हम उसके शिकंजे में थे, और मसीह, हमारा परमेश्वर आया, और उसने हमें स्वतंत्र किया। अपने जीवन के द्वारा उसने कीमत चुकाई, वह क्रूस पर मरा, कब्र में से जी उठा, ताकि आप पाप से स्वतंत्र होकर परमेश्वर के बेटे या बेटी बन जाएँ। यही सुसमाचार है।

हमारा स्वामी हमारा सेवक बन गया। अतः, यदि कोई ऐसा व्यक्ति इस प्रचार को सुन रहा है जो पाप के दासत्व में चलता रहा है, जो एक विद्रोही के रूप में परमेश्वर से भागता रहा है, तो वह यह जान ले किः आपकी सेवा के लिए परमेश्वर उतर आया, आपके पापों के बदले में क्रूस पर मरने के लिए उसने अपने पुत्र को भेजा, ताकि उस पर विश्वास करने के द्वारा, आपके लिए की गई उसकी सेवा पर विश्वास करने के द्वारा, आप बच सकें। हे मसीही, यह कुछ ऐसा नहीं है जिसे उसने 2,000 साल पहले किया था। आज सुबह जब आप उठे, वह साँस से आपकी सेवा कर रहा है, आज की आपकी हर एक जरूरत में वह आपकी सेवा कर रहा है। वह आपकी सारी जरूरतों को पूरा कर रहा है। वह आपका सेवक है। कितना आश्चर्यजनक सत्य और तेजोमय यथार्थ है! साँस रोक देने वाला अहसास कि एक–एक पल, मसीह आपकी सेवा कर रहा है। वह अपने वचन से आपके दिल को तृप्त और पोषित कर रहा है। कल सुबह जब आप उठेंगे, तो पूरे सप्ताह के लिए आपको पोषित करने और आपकी सेवा करने और आपको तैयार करने और आपको सामर्थ देने के लिए वह उपस्थित रहेगा।

हमारा स्वामी हमारा दास बन गया है, इसलिए, अब हमें मसीहियत के इस सार का अहसास है कि हम आनन्द से परमेश्वर के दास बनते हैं। रोमियों 1 के आरम्भ में जब पौलुस अपने बारे में बताने के लिए एक शब्द को खोज रहा था, वह कहता है, "पौलुस, मसीह का दास। यही मेरी पहचान है। मैं किसी और का हूँ। मैं किसी दूसरे के अधिकार के अधीन हूँ। मैं किसी दूसरे के लिए कार्य करता हूँ। मैं किसी दूसरे की महिमा के लिए कार्य करता हूँ। मसीही होने का मतलब यही है। इसका मतलब है कि हम किसी दूसरे के हैं, हम परमेश्वर के दास हैं।"

Permissions: You are permitted and encouraged to reproduce and distribute this material provided that you do not alter it in any way, use the material in its entirety, and do not charge a fee beyond the cost of reproduction. For web posting, a link to the media on our website is preferred. Any exceptions to the above must be approved by Radical.

Please include the following statement on any distributed copy: By David Platt. © David Platt & Radical. Website: Radical.net